प्रधानमंत्री व्याख्यान श्रृंखला

प्रधानमंत्री चन्द्रशेखर का जीवन और विरासत

हरिवंश नारायण सिंह

उपसभापति, राज्य सभा

समसामयिक अध्ययन केन्द्र

प्रधानमंत्री संग्रहालय एवं पुस्तकालय

2025

प्रधानमंत्री चन्द्रशेखर का जीवन और विरासत

- हरिवंश नारायण सिंह

नमस्कार। चंद्रशेखर जी के जीवन और विरासत पर बोलने के आमंत्रण के लिए आभार, प्रधानमंत्री संग्रहालय एवं पुस्तकालय के चेयरपर्सन आदरणीय, नृपेन्द्र मिश्र जी, भाई ए. सूर्यप्रकाश जी (*वाइस चेयरमैन एक्जिक्युटिव कांउसिल, प्राइम मिनिस्टर्स म्यूजियम एण्ड लाइब्रेरी*), श्री संजीव नंदन जी (*डायरेक्टर, प्राइम मिनिस्टर्स म्यूजियम एण्ड लाइब्रेरी*), डॉक्टर रवि मिश्रा जी (*डिप्टी डायरेक्टर, प्राइम मिनिस्टर्स म्यूजियम एण्ड लाइब्रेरी*), चंद्रशेखर जी के साथ रहे यहाँ अनेक लोग मौजूद हैं, उन सबको भी नमस्कार। भारत के भविष्य बच्चे, जो यहाँ मौजूद हैं, खासतौर से उनके बीच आकर निजी प्रसन्नता है। आज यहाँ हमें एक ऐसे व्यक्ति के बारे में बोलने का अवसर मिला है, जिनकी साहसिक *राइटिंग्स* (लेखन), *एडिटोरियल्स* (संपादकीय) व दो टूक विचारों ने जब हम किशोर से युवा हो रहे थे, तब इस लेखन-विचार ने हमारे मन और मस्तिष्क को साहस का मर्म बताया। तब *यंग इंडियन* में उनके (चंद्रशेखर जी के) लिखे *एडिटोरियल आई डू रिमेंबर* (अब भी स्मृतियों में हैं) *स्टेट्समैन*, *हिंदुस्तान टाइम्स* और *इंडियन एक्सप्रेस*, में वे तब *बैनर हेडलाइंस* बनते थे। *दैट वाज दि पावर ऑफ हिज थॉटफुल राइटिंग*। यह उनके विचारों या वैचारिक लेखन की ताकत थी।

'72 से '75 का दौर था। चंद्रशेखर जी के ही इलाके का हूँ। पर उनसे पहली बार मिलना 1978 में, मुंबई में हुआ। पत्रकारिता के शुरूआती दिन थे। *टाइम्स ग्रुप* के साथ था। जयप्रकाश जी बीमार थे। जसलोक में भर्ती थे। उनके गाँव का होने के कारण वहां यानी जसलोक अस्पताल का *रेगुलर विजिटर* था। वहीं चंद्रशेखर जी से हमारी पहली मुलाकात हुई।

दिल्ली का एक खास.. विशिष्ट चरित्र है। हम सब तात्कालिक राजनीति में इस कदर डूब जाते हैं कि सामयिक राजनीतिक इतिहास, उसके अतीत को लगभग भूल जाते हैं। वह अतीत या इतिहास, जिसने इस मुल्क के भविष्य पर असर छोड़ा, तूफानों के बीच देश की किश्ती की रहनुमाई की। कभी-कभार ऐसा अवसर मिलता है, जब देश की इस यात्रा के पुराने पन्नों को हम पलटते हैं। उनसे सीखते हैं। 1947 के

बाद, इतिहास की पगडंडियों से गुजरते हुए आज भारत, दुनिया की पाँचवी अर्थव्यवस्था है। दिल्ली में अनेक म्यूजियम हैं परन्तु, इनमें शायद ही कोई ऐसी जगह है जहाँ देश के अतीत और इतिहास को जीवंत रूप में हम याद कर भविष्य के लिए एक दृष्टि पा सकते हैं। दुनिया के अन्य देशों में हमने ऐसे अनेक संग्रहालय देखे हैं जहाँ इस किस्म के भव्य *मेमोरियल्स* हैं। जहाँ उनके *स्टेट्समैन* का, *प्रेसिडेंट्स* का या जिन लोगों ने वहाँ शासन किया, उनसे जुड़े सारे पेपर, सारे तथ्य रखे जाते हैं। परन्तु, भारत में अलग-अलग प्रधानमंत्रियों के कार्यकाल में उनकी भूमिका, जैसा आदरणीय नृपेन्द्र मिश्र जी ने बताया, उनकी विरासत को स्मरण करने के लिए कोई एक जगह नहीं थी। श्रेष्ठ और आधुनिकतम संग्रहालय-*स्टेट ऑफ दि आर्ट म्यूजियम*/संग्रहालय। इस *प्राइम मिनिस्टर म्यूजियम* के लिए आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के *विजन* और उनकी दूर दृष्टि के प्रति आभार और धन्यवाद। श्री नृपेन्द्र मिश्र जी एवं प्रधानमंत्री संग्रहालय से जुड़ी उनकी पूरी टीम, जिन्होंने इस पूरे *विजन* को व्यवहारिक धरातल पर एक जीवंत रूप दिया, उनके प्रति भी आभार। विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि यह संग्रहालय आज दुनिया के सर्वश्रेष्ठ *पॉलिटिकल हिस्ट्री म्यूजियम* में से एक है।

चर्चा के आरंभ में ही स्पष्ट कर दूँ कि हर असाधारण व्यक्ति के जीवन का मूल्यांकन उसके जीवन देश-काल या *एरा* (दौर) या तत्कालीन *टाइम* (समय) और *सर्कम्स्टैन्सज* (परिस्थिति) के संदर्भ में ही होता है। यह सीमा, प्रकृति ने ही तय की है। कन्फ्यूशस ने कहा था, अतीत का अध्ययन करें। अनेक इतिहासकारों ने भी कहा है, उससे भविष्य की झलक मिलेगी। इसी क्रम में प्रधानमंत्री रहे, हर विशिष्ट व्यक्ति के योगदान, विरासत और जीवन पर आधारित यह *लेक्चर सीरीज* (व्याख्यान शृंखला) एक दृष्टि सम्पन्न पहल है। इसके लिए पुन: बधाई देना चाहता हूँ।

इसी क्रम में आज श्री चंद्रशेखर पर चर्चा का यह दायित्व हमें मिला है। उनके जीवन, *लेगसी*, भारत के आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक जीवन में उनकी भूमिका याद करने का अवसर। बहुत ब्रीफ्ली (संक्षेप) आपको बताना चाहूँ कि चंद्रशेखर जी 1927 में जन्मे। 80 वर्ष की उम्र में वे नहीं रहे। देश के नाजुक मोड़ पर '90 से '91 के बीच मुल्क के आठवें प्रधानमंत्री बने।

महज 15 वर्ष की उम्र में, 1942 में बलिया की अभूतपूर्व बगावत में छात्र के रूप में उनकी सक्रिय भूमिका रही। आप उनकी चेतना समझ सकते हैं। अगर 1942 और 15 वर्ष की उनकी उम्र का यह आधार लें, तो लगभग 65 वर्षों की उनकी *पॉलिटिकल लाइफ* रही। इनमें '62 से लेकर '77 (15 वर्ष) तक वह राज्यसभा के सदस्य रहे। '77 से 2007 के बीच लगातार आठ बार बलिया से सांसद चुने गए। एक बार

'84 से '89 में वह चुनाव हारे। इस तरह 40 वर्षों तक भारतीय संसद के सदस्य रहे। इन 40 वर्षों में लगभग तीन वर्ष केंद्र में सत्तारूढ़ पहली गैर कांग्रेसी सरकार वाली, जनता पार्टी के अध्यक्ष रहे। लगभग सात माह 10 नवंबर 1990 से 21 जून 1991 तक देश के प्रधानमंत्री। इन महीनों में से लगभग साढ़े तीन माह *केयरटेकर* प्रधानमंत्री। इस तरह 65 वर्ष के लंबे राजनीतिक जीवन में, सत्ता में वह महज साढ़े सात माह प्रधानमंत्री रहे। लगभग तीन वर्ष जनता पार्टी का अध्यक्ष का कार्यकाल हटा दें, तो लगभग 37 वर्ष सिर्फ सांसद रहे।

इन वर्षों में से इन 10 वर्षों को अगर आप घटा दें, जो कांग्रेस में रहे (65 से 75), तो लगभग 52 वर्षों तक, उन्होंने विपक्ष की राजनीति की। अपने जीवन में कभी उन्होंने किसी दल को नहीं छोड़ा। एक बड़ा *मिस्कन्सेप्शन* (गलत अवधारणा) है। जिन दलों में रहे, उन दलों ने उनसे मुक्ति पाई। उनके वैचारिक तेवर-प्रखरता व प्रतिबद्धता के कारण। नब्बे के दशक के चंद महीनों में, देश के प्रधानमंत्री के रूप में लोग, उन्हें याद करते हैं। उन चुनौती भरे दिनों में जिन फैसलों ने देश को दिशा दी, उन्हें समझने के लिए, चंद्रशेखर जी के व्यक्तित्व, सोच और चिंतन व राजनीतिक कार्यकर्ता के रूप में उनके छह दशकों के जीवन पर दृष्टि डालना प्रासंगिक होगा।

आज जब आपके सामने खड़ा हूँ चंद्रशेखर जी के व्यक्तित्व के चार पहलू या चीजें याद आती हैं। पहला है, कन्विक्शन (आस्था)। किस किस्म की उनकी आस्था थी, जिस भी विचार में उन्होंने यकीन किया, उस आस्था का स्तर क्या था? दूसरा है—*करेज* (साहस)। आस्था को *इम्प्लिमेंट* (व्यावहारिक धरातल पर लागू) करने के लिए कैसा साहस था, उनमें? उनका क्या *कान्ट्रब्यूशन* (योगदान) है, क्यों हम आज याद करें? हमारे बच्चे जो बैठे हैं, वे इनसे क्या सीख सकते हैं? या *यंग* (युवा) पीढ़ी उनसे क्या जान सकती है? अपने जीवन में युवा उनके जीवन से क्या पा सकते हैं? तीसरा है, उनका *कान्ट्रब्यूशन* (योगदान) या *फोर्साइट* (विजन) । वह क्या था? योगदान और विरासत। चौथा है, *सिविलिटी* (मर्यादा)। *रेयर* (दुर्लभ) चीज उनके अंदर अद्भुत थी। कुछ उदाहरणों से उसका उल्लेख करूंगा।

सबसे पहले उनके *कन्विक्शन* पर चर्चा करना चाहूंगा। *कन्विक्शन* के बारे में 18वीं शताब्दी में विचारक एंटोनी ट्रेसी ने एक *टर्म डिफाइन* किया—*'साइंस ऑफ फॉर्मेशन ऑफ आइडियाज ह्विच इनलाइन विद प्रीवेलिंग इनलाइटनमेंट एस्पिरेशन ही बिलीव, कुड प्रमोट सोशल प्रोग्रेस ऐंड कॉमन गुड।'* वह दौर कैसा था, जिसमें चंद्रशेखर जी जैसे लोग बड़े हो रहे थे? उस दौर को *डिफाइन* (परिभाषित) करने

के लिए एक पैरा ढूंढ रहा था। अंग्रेजी के प्राध्यापक रहे पर हिंदी में बहुत बढ़िया पत्रकारिता जिन्होंने की, राजेंद्र माथुर जी। उनका एक कोट आपको सुनाता हूँ, ताकि उस दौर की झलक मिले।

चंद्रशेखर किस किस्म के व्यक्ति थे? या किस दौर में वह पले-बढ़े? उनके विचार, उनकी आस्था किस दौर में बनी? उस दौर के बारे में राजेंद्र माथुर जी कहते हैं, *'लेनिन की बोल्शेविक क्रान्ति। दस दिन, जिन्होंने दुनिया को हिला दिया....तब लगता था कि एक प्रयत्न और किया, एक धक्का और दिया, तो यह पृथ्वी हर्षातिरेक की सामूहिक समाधि तक पहुँच जाएगी। लेकिन वह नहीं पहुँची। स्वर्ग के द्वार पर दस्तक देकर बीसवीं शताब्दी लौट आई। तब कौन जानता था कि ये पट कभी नहीं खुलते। इंसानियत की नियति है कि वह बार-बार इन पटों पर दस्तक दे, हर सदी में अपने-अपने ढंग से दस्तक दे। नियति है कि द्वार तक पहुँचकर हम छले जाएं। यही प्रगति है। मंजिल सदा-सदा से छल ही रही है। केवल प्रयत्न यथार्थ है और हमारे सपनों का कैल्क्यलस यथार्थ है...'*

फिर वह आगे कहते हैं, *'गांधी का सत्याग्रह! कब्र में लटके हुए देश पर फूंका गया एक मंत्र, जो उसे संज्ञा देता है, हरकत देता है, काले बाल और गर्म रक्त देता है, और अन्यायी की आंख में आंखें डालकर देखने की ताकत देता है।'* यही वह समय था, दौर था। उसी दौर में चंद्रशेखर जी बड़े हो रहे थे, विद्यार्थी जीवन से युवा और वयस्क।

इसी एरा (दौर) में चंद्रशेखर की निजी और राष्ट्रीय चेतना विकसित हुई। एक बार मशहूर पत्रकार राम बहादुर राय ने उनसे पूछा कि आपके जीवन का *टर्निंग पॉइन्ट* क्या था? उनके *कन्विक्शन* (वैचारिक प्रतिबद्धता) का उत्तर इससे मिलेगा। उन्होंने कहा, *'कभी-कभी छोटी बातें भी जीवन में बड़ा बदलाव ला देती हैं। छोटे से गाँव में पैदा हुआ। गरीब घर से था। मध्यम वर्ग भी नहीं कह सकते। गरीबी को मैंने बहुत करीब से देखा है। गांधी कहते थे कि अंग्रेज जब देश से बाहर हो जाएंगे, तो गरीबी चली जाएगी। '47 में जब देश आज़ाद हुआ, उस वक्त मैं इंटर का छात्र था। 15 अगस्त, 1947 को दोपहर में जुलूस निकला। मैं अपने समाजवादी मित्रों के साथ घूम रहा था। हम लोगों के लिए दोपहर में खाने का इंतजाम एक जगह हुआ था। काफी लोग थे। एक मंत्री के निजी सचिव ने पैसा दिया था। उसी पैसे से खाना बना। मैं खाना खा रहा था लेकिन मेरे मस्तिष्क में कुछ और चल रहा था। मुझे यह बात अंदर ही अंदर कचोट रही थी कि आज भी हमारे जैसा आदमी खाने के लिए किसी का मोहताज है, कैसी है ये आज़ादी? एक टर्निंग पॉइन्ट तो यह था जब हमने आज़ादी का अर्थ केवल रोटी को समझा था। जीवन का एक टर्निंग* पॉइन्ट। दूसरा

टर्निंग पॉइन्ट एम.ए. *करने के बाद आया।'* आगे वह कहते हैं, *'अध्यापक बनने का ख्याल आया। इलाहाबाद छोड़ बनारस पहुँच गया। पॉलिटिकल साइंस के विभाग के प्रमुख मुकुट बिहारी जी से मिला।'*

बीएचयू के प्रोफेसर मुकुट बिहारी जी जानेमाने बड़े *पॉलिटिकल साइंटिस्ट* थे। प्रोफेसर लॉस्की के *डायरेक्ट स्टूडेंट्स* में से। उनसे *'मैंने (चंद्रशेखर जी) अपनी मन की बात कही। उन्होंने पूछा कि किस विषय में थीसिस लिखोगे? मैंने तुरंत उत्तर दिया, इन्फ्लुएंस ऑफ इकोनॉमिक डेवलपमेंट ऑन पॉलिटिकल थॉट।' सी दि टॉपिक विच ही सिलेक्टिड। 'वह समय था जब कम्युनिस्ट पार्टी वाले आतंक फैला रहे थे। उस समय सोशलिस्टों की एक समिति बनी। मुकुटबिहारी लाल, राजाराम शास्त्री, आचार्य नरेंद्रदेव आदि उसमें थे और समिति के अध्यक्ष अंसारी साहब बने। अंसारी जी को एक सहायक की आवश्यकता थी। समिति की एक बैठक में राजनारायण ने मेरा नाम सुझाया। प्रो. मुकुट बिहारी ने कहा कि इनको डिस्टर्ब मत कीजिए। ये थीसिस लिखने जा रहे हैं। दो सालों में पूरा हो जाएगा। एक योगदान होगा। बैठक में मौजूद आचार्य जी ने कहा, चंद्रशेखर, इन प्रोफेसरों के चक्कर में मत पड़िए। इन्होंने बहुतों की जिंदगी बर्बाद की है। सोचिए, जब देश ही नहीं रहेगा, तो आपकी थीसिस कौन पढ़ेगा? उन्होंने कहा, देश-निर्माण के कार्यों में लगो। उस दिन से लेकर आज तक देश बनाने के कार्यों में जुटा हूँ। कितना बना, पता नहीं...'*, रामबहादुर जी के प्रश्न के जवाब में यह चंद्रशेखर जी का *कन्क्लूडिंग* वाक्य था।

हमारी मुंबई में पहली मुलाकात थी। उस वक्त की *लार्जेस्ट सेलिंग* (सर्वाधिक बिकने वाली) हिंदी पत्रिका *धर्मयुग* थी। छह-सात लाख *पर वीक* (प्रति सप्ताह) बिकती थी। उसमें उनका *इंटरव्यू* किया था। उस *इंटरव्यू* में उन्होंने बताया, *'मैं गाँव से आया हूँ, वहाँ की जमीन से मैंने राजनीति शुरू की, मैंने गाँव की पीड़ा को परखा था, बेबसी को भुगता था, उससे छुटकारा मिले इसके लिए प्रयास किया, राजनीति मेरे लिए बौद्धिक विलास नहीं था। यह आपबीती, पीड़ा से उपजी कराह थी।' यू कैन जस्ट सी हिज वर्ड्स* (आप उनके शब्दों को गौर करें)। वह प्रायः कहते थे हमने समाजवाद का पाठ किताबों से नहीं पढ़ा, जीवन के अनुभवों ने हमें सिखाया।

अब उनके कन्विक्शन पर कुछ बातें। शुरू में एक साल के लिए वह पार्टी के नगर *सेक्रटेरी* रहे। विश्वविद्यालय पढ़ाई के दौरान इलाहाबाद में '52 के चुनाव में अपनी पार्टी के प्रत्याशी के लिए वह चौक-चौराहे पर प्रचार में जाते थे। अकेले खड़े होते थे। बोलते थे। दस-बीस लोग इकट्ठे हुए, सुने, फिर अगले चौराहे पर। आप *कन्विक्शन* का यह *लेवल* देखिए। *मीटिंग* की कोई पूर्व तैयारी नहीं। पास कोई सुविधा पैसा नहीं। पर, अपनी बात कहने के लिए उन्होंने अकेले ऐसा रास्ता अपनाया।

याद रहे, उनकी पारिवारिक आर्थिक स्थिति कैसी थी? देश के सबसे पिछड़े इलाके से वह थे। परन्तु, उन्होंने तब भी वह *पॉलिटिकल* पार्टी नहीं चुनी, जो सत्ता में थी। उस पार्टी को चुना, उस विचारधारा को चुना, जिसके लिए तब कोई सपना भी नहीं देखता या सोचता था कि कभी इन्हें सत्ता मिलेगी। *सी दि लेवल ऑफ कन्विक्शन*। यह सब बहुत ब्रीफ्ली आपको बता रहा हूँ। इलाहाबाद में जब वह काम कर रहे थे। खाने-पीने का नियमित इंतजाम नहीं था। उनकी अनेक शामें बिना भोजन के भी गुजरीं। छात्र जीवन के बारे में उन्होंने लिखा, *'इलाहाबाद में एक पावर हाउस था। उसके सामने मजदूरों के लिए खाना बनाने वाला ढाबा था। वहाँ मुझे चार आने में रोटी और कोहड़े (सीताफल) की या लौकी की सब्जी मिल जाती थी। वही खाकर मैं रहता था। पहले से ही मुझे पेट की तकलीफ थी, वह और बढ़ गई।'*

फिर पार्टी ने बलिया का दायित्व सौंपा । इसी तरह बलिया में उनके काफी रिश्तेदार थे। मित्र थे, जो *मेस* चलाते थे, पर वहाँ वह नहीं जाते थे। कोई पूछता था, तो कह देते, खा लिया। परन्तु करते क्या थे? उन्हीं के शब्दों में *'दिन में कुछ भी सत्तू या चना आदि खा लेता था। शाम के भोजन का भी यही हाल था। कमल के पत्ते में तीन आने की रोटी और सब्जी पैक कराकर बलिया स्टेशन पर चला जाता था। वहाँ सीमेंट की बेंच पर बैठ कर खाता था। रेलवे के नल से पानी पीकर पार्टी ऑफिस में सो जाता था। हालाँकि तब तक मैं आम लोगों के बीच जाना जाने लगा था। सड़क पर इस तरह ज़िन्दगी गुजारने का असर मेरी सेहत पर पड़ा। मैं बुरी तरह बीमार हो गया। पेट की तकलीफ काफी बढ़ गई।'* बीमार पड़े, फिर बिल्कुल मौत के कगार से वह लौटे।

विस्तार में जाने का समय नहीं है। इस तरह कुछ वर्षों में उनके काम से प्रभावित हो कर, पार्टी में टूट के बाद आचार्य नरेंद्रदेव ने पार्टी (प्रजा सोशलिस्ट पार्टी) पुनर्गठित किया, तो उन्हें *जॉइन्ट सेक्रटेरी* बनाकर लखनऊ बुलाया। पहले तो उन्होंने आचार्य जी से अनुरोध किया, बताया मैं क्यों लखनऊ में इस पद पर काम नहीं कर सकता? *देन ही हैड ए काइंड ऑफ आर्ग्युमेन्ट विद* आचार्य नरेंद्र देव। उन्हें बताया कि हमें इन-इन लोगों से *रिजर्वेशन* है। आचार्य जी ने कहा कि आप मुझ पर भी विश्वास नहीं करते? तब (चंद्रशेखर) कहा, *आई विल डू दिस असाइनमेंट*। लखनऊ में पार्टी का दफ्तर क्या था? पार्टी दफ्तर एक ऐसी जगह था, जिसके जीना या सीढ़ियों पर चढ़ते हुए सीढ़ी टूटने का एहसास होता था? वहाँ क्या हालात थे? कोई चंदा नहीं, कुछ नहीं, जो विधायक जीत कर आए थे, थोड़ा-बहुत *कान्ट्रब्युशन* वे स्वतः हर महीने दस रुपये करते थे । बाद में उन्होंने भी देने से मना कर दिया। कोई उनसे पैसा एकत्र करने नहीं जाता था। उस वक्त चंद्रशेखर जी ने क्या निर्णय किया? कहा कि *'सब लोग (पार्टी विधायक) कहते हैं कि*

हमारी आर्थिक हालत खराब है। सबने बैठकर तय किया कि आज से कोई चंदा मांगने नहीं जाएगा, चाहे जैसे भी हो हम काम चलाएंगे। खैर हम लोगों ने कुछ दिन चना-चबेना खाकर गुजारे। रात को खिचड़ी बनाते थे। खिचड़ी भी अपने हाथ से बनानी पड़ती थी। वे लोग मुझे बर्तन नहीं धोने देते थे। अपने आप धो लेते थे। देर रात खाना खाते थे। बर्तन वैसे ही जूठे पड़े रहते थे। सब लोग देर तक सोते थे। सवेरे मैं जल्दी उठ जाता था। उन सबके जागने से पहले बर्तन मैं धोता था।' यह काम दशकों तक उन्होंने (चंद्रशेखर) किया। परन्तु, यह काम करते हुए, उनका किस तरह फोकस था सब लिखा है। आगे मैं नहीं जाना चाहता। कई बार प्रायः भूखे पेट रहना पड़ता। पर उन्हीं दिनों पूरे उत्तर प्रदेश में बस, रेल, साइकिल से घूमकर पी.एस.पी. (प्रजा सोशलिस्ट पार्टी) को '57 के चुनाव में दूसरे नंबर की बड़ी पॉलिटिकल पार्टी बनाया। मजबूत पार्टी संगठन खड़ा कर दिया, अपने *कन्विक्शंस* के आधार पर। तब जब सारे *सोशलिस्ट स्टॉलवर्ट्स* नेता डॉक्टर लोहिया के साथ चले गए थे। उन दिनों नारायण दत्त तिवारी इसी पार्टी में थे।

इससे हमारे युवा क्या सीख सकते हैं? *कन्विक्शन* पर चलकर किसी व्यक्ति ने किस तरह से चीजों को *रिराइट* किया, जहाँ कोई उम्मीद नहीं थी। कम समय में उनकी एक *नेशनल आइडेंटिटी* (राष्ट्रीय पहचान) बन गई। उनको कोट रहा हूँ। '58-59 के आसपास जब वह पार्टी का काम करते थे, उत्तर प्रदेश में। बेंगलुरु में एक अधिवेशन हुआ। एस.एम. जोशी *वाज वन ऑफ दि टॉलेस्ट लीडर्स ऑफ सोशलिस्ट मूवमेंट*। उन दिनों महाराष्ट्र को अलग करने का *मूवमेंट* चल रहा था। सभी पार्टियों ने मिलकर के एस.एम. जोशी को उस संघर्ष समिति का अध्यक्ष चुना था। महाराष्ट्र में सारी पार्टियां एक साथ चुनाव लड़ना चाहती थीं। एस.एम. जोशी जी ने लिखा है कि कैसे मैंने चंद्रशेखर को जाना? *ही रोट, 'इट वाज इन दि जनरल काउंसिल मीटिंग ऑफ द प्रजा सोशलिस्ट पार्टी इन बेंगलोर दैट आई फर्स्ट मेट चंद्रशेखर। एट बेंगलोर, चंद्रशेखर ऐंड आई क्लैश्ड इन दि इशू ऑफ दि संयुक्त महाराष्ट्र मूवमेंट, विच आई वाज देन लीडिंग। जेपी ऐंड आचार्य नरेंद्रदेव वर इन सिंपैथी विथ आवर डिमांड। चंद्रशेखर वहमेंटली अपोज्ड द रेजोल्यूशन आई हैड मूव्ड विच सॉट दि परमिशन ऑफ दि जनरल काउंसिल फॉर फाइटिंग दि जनरल इलेक्शन अंडर दि बैनर ऑफ संयुक्त महाराष्ट्र समिति। ए यूनाइटेड फ्रंट ऑफ ऑल ऑफ दि अपोजिशन पार्टीज, दि फ्रंट हैड अडॉप्टेड कॉमन प्रोग्राम बट दि पार्टीज अलाउड टू यूज देर ओन सिंबल्स इन दि इलेक्शन।'*

आगे सुनिए एस.एम. जोशी क्या कहते हैं? चंद्रशेखर बहुत यंग थे, उन दिनों, *'टू माय ग्रेट सरप्राइज चंद्रशेखर अपोज्ड दि मोशन ऑलदो, एग्जिक्यूटिव कमेटी हैड एंडोर्सड इट। दि रेजोल्यूशन गॉट*

थ्रू, बट एट वन स्टेज आई वाज आफ्रेर्ड दैट दि यंग यू.पी. सोशलिस्ट विथ हिज वहमेंट ऐंड पर्सवेसिव स्पीच, वुड टर्न दि मेजॉरिटी इन हिज फेवर। दस माय एक्विटेंस विथ चंद्रशेखर बिगन विद कन्फर्टेशन विच, इन कोर्स ऑफ टाइम, डेवलप्ड इनटू इंटीमेट फ्रेंडशिप...' फिर आगे वह कहते हैं कि *'ड्यूरिंग बेंगलोर कन्वेंशन चंद्रशेखर मेड ए हार्ड हिटिंग स्पीच ऐंड गेव ए पावरफुल एक्सप्रेशन टू दि अर्जेंस ऑफ एस्पिरेशंस ऑफ दि रैंक ऐंड फाइल इन दि सोशलिस्ट मूवमेंट। आई वाज ग्रेटली इंप्रेस्ड बाय हिज सिंसेरिटी ऐंड हिज एनालिटिकल अप्रोच ऐंड इट वाज नो वंडर दैट नॉलेजेबल पीपल स्टार्टेड लुकिंग अपऑन हिम एज दि राइजिंग स्टार ऑफ दि सोशलिस्ट मूवमेंट...'*

इस समाजवादी आस्था, इस *कन्विक्शन* (प्रतिबद्धता) के साथ उन्होंने राजनीति में अपना काम शुरू किया। कवि के रूप में उन्हें रहीम बहुत प्रिय थे। वह प्रायः रहीम का कहा दुहराते। जिसका आशय था कि मन की बात मन में रखें, किसी और से शेयर न करें। पार्टी सांसद बनकर '62 में संसद व दिल्ली आए। सांसद बनकर जब वह यहाँ पहुँचे, तो क्या महसूस किया? आपको सुनाता हूँ। उन्हीं के कथन से। वह लिखते हैं, *'मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि संसद में सदस्य हो जाऊंगा। '62 में राज्यसभा का सदस्य होकर जब दिल्ली आया, तो बहुत घबराया हुआ था। मुझे अशोका होटल में जाने में डर लगता था। कहीं कांटा या चम्मच गलत तरीके से ना पकड़ लूं। थोड़े ही दिनों में मुझे प्रमुख सदस्यों के बीच जाने का मौका मिलने लगा। क्योंकि संसद में बिना हिचक अपनी बात कहने लगा था। युवा मंत्रियों के घर पार्टियाँ होती थीं। प्रायः हर दावत में मुझे बुलाया जाता था। उनमें जहाँ भी गया, वहाँ कमरे की सुंदरता पर ज्यादा जोर दिया जाता था। दीवार और सोफे के रंग से पर्दा बिल्कुल मैच कर रहा है या नहीं, कालीन का रंग कैसा है? इन बातों का ज्यादा ख्याल था...'* आगे वह कहते हैं, *'मुझे बड़ी निराशा हुई कि देश उनके एजेंडा पर नहीं था।'* ये हमारे *रूलिंग इलीट* की स्थिति तब थी।

अशोक मेहता के एक सवाल पर उनकी पार्टी (प्रजा सोशलिस्ट पार्टी) ने उन्हें निकाल दिया। उस विस्तार में नहीं जाना चाहता। जब पार्टी ने निकाल दिया, तो कुछ दिनों तक वह निर्दलीय रहे। फिर कांग्रेस में गए। पहले ही उनके कुछ अन्य मित्र पंडित नेहरू जी और कामराज जी की पहल पर कांग्रेस में चले गए थे। उन लोगों में गुरुपद स्वामी, इंद्र कुमार गुजराल, अशोक मेहता वगैरह थे। वे रोज इंदिरा जी के यहाँ बैठते थे, शाम में। तब इंदिरा जी मंत्री थीं। इन लोगों के आग्रह पर वह इंदिरा जी से मिलने गए। इंदिरा जी से उनकी पहली मुलाकात बड़ी दिलचस्प है। इसमें आप उनके राजनीतिक *कन्विक्शन* का *लेवल* (स्तर)

देख सकते हैं। व्यक्तित्व की झलक पा सकते हैं। सब लोग उनके *लॉन* में बैठे थे। इंदिरा जी से वहीं बात हुई।

इंदिरा जी ने सवाल किया, चंद्रशेखर जी क्या आप कांग्रेस को समाजवादी मानते हैं?

कहा, मैं नहीं मानता कि कांग्रेस समाजवादी संस्था है, पर लोग ऐसा कहते हैं।

फिर आप कांग्रेस में क्यों आए?

कहा, क्या आप सही उत्तर जानना चाहती हैं?

हां, मैं यही चाहती हूँ।

मैंने प्रजा सोशलिस्ट पार्टी में 13 साल तक पूरी क्षमता और ईमानदारी से काम किया, दल को मैंने पूरी निष्ठा से समाजवाद के रास्ते पर ले जाने की कोशिश की, लेकिन काफी समय तक काम करने के बाद मुझे लगा कि संगठन ठिठक कर रह गया है, पार्टी कुंठित हो गई है, बढ़ती नहीं है, अब यहाँ कुछ होने वाला नहीं है। फिर मैंने सोचा कि कांग्रेस एक बड़ी पार्टी है, इसी में चलकर देखें, कुछ करें।

इंदिरा जी ने पूछा लेकिन यहाँ आने के बाद आप क्या करना चाहते हैं?

कहा, मैं कांग्रेस को सोशलिस्ट बनाने की कोशिश करूंगा।

फिर इंदिरा जी ने कहा अगर ना बनी तो?

फिर चंद्रशेखर क्या कहते हैं?

कहा, इसे तोड़ने का प्रयास करूंगा।

आगे कहते हैं, क्योंकि यह जब तक टूटेगी नहीं, तब तक देश में कोई नई राजनीति नहीं आएगी। पहले तो मैं प्रयास यही करूंगा कि समाजवादी बने। पर यदि नहीं बनी, तो इसे तोड़ने के अलावा कोई रास्ता नहीं बचेगा।

दिस शोज़ हिज पर्सनैलिटी,

सी दि प्रोफेटिक वर्ड ऐंड ही डिड इट।

इंदिरा जी, थोड़ी नाराज हुईं। कहा, मैं आपसे सवाल पूछ रही हूँ, आप मुझे इस तरह का उत्तर दे रहे हैं।

मैंने (चंद्रशेखर) बिना हिचक कहा, सवाल आप पूछ रही हैं, तो उत्तर आपको ही दूंगा।

इंदिरा जी ने फिर पूछा, पार्टी तोड़ने से आपका क्या मतलब है, इससे क्या होगा?

फिर चंद्रशेखर कहते हैं, *'देखिए कांग्रेस बरगद का पेड़ हो गई है। इसकी छांव में दूसरा कोई पौधा विकसित नहीं होगा। इस बरगद के नीचे कोई पौधा पनप नहीं सकता, क्योंकि बरगद के नीचे पौधे नहीं पनपते। इसलिए जब तक यह पार्टी टूटेगी नहीं, कोई क्रांतिकारी परिवर्तन देश में नहीं हो सकता। श्रीमती गांधी विस्मित-सी मुझे देखती रह गईं। बाद में भी मैंने श्रीमती गांधी से सदा स्पष्ट बातें की। उनसे अपना मत कभी छुपाया नहीं।'* ये थे, चंद्रशेखर।

उनके संसदीय जीवन की शुरूआत कैसे हुई? कैसे वह वैचारिक तौर पर चीजों को *लॉजिकल ऐंड* तक ले गए। वह जब *पार्लियामेंट* में आये, तो आमतौर पर उस दौर के सारे *सोशियो-इकोनॉमिक* (सामाजिक-आर्थिक), बुनियादी सवाल थे, उनको उठाना शुरू किया। बड़ी तैयारी के साथ। पंचवर्षीय योजनाओं की कार्यशैली। भूमि सुधार पर, कहा कांग्रेस '1930-32 से यह मांग कर रही है। आर्थिक कृषि नीति, 1957 में अशोक मेहता की कमेटी गठित थी, उसकी *रिपोर्ट्स* निकालकर, '63 में सार्वजनिक क्षेत्रों के उद्यमों पर चर्चा, '59 में कमेटी बनी थी, प्रोफेसर ज्ञानचंद वगैरह की उस पर सारी *रिपोर्ट्स* निकालकर, इस तरह अलग-अलग मुद्दों पर वह काफी *होमवर्क* करके आते थे। तब ना गूगल था, ना बाकी *सोर्स* थे। *जस्ट थिंक ओवर* इट। बैंक राष्ट्रीयकरण पर 20 दिसंबर, 1963 को बोले। *प्रिवीपर्स* उन्मूलन पर बोले। संपत्ति का अधिकार, मौलिक अधिकार ना रहे, इस विषय पर बोले। पार्टी में अभियान चलाया। सांप्रदायिकता, संप्रदायवाद पर चर्चा की। *मुस्लिम पर्सनल लॉ* पर बहस की। *यूनिफॉर्म सिविल कोड* पर बोले। इन मुद्दों पर उनके (चंद्रशेखर) संसद में जो विचार हैं, आप कल्पना नहीं कर सकते। किस तरह से *स्ट्रेट फॉरवर्ड* (सीधा व स्पष्ट) बात करने की क्षमता, उनमें थी?

उन दिनों चुनाव सुधार पर बोले। कांग्रेस में आने के बाद, *कांग्रेस फॉर सोशलिस्ट एक्शन ग्रुप* बनाया। '67 में बहुत प्रभावी ढंग से इस *ग्रुप* ने काम किया। फिर देश की राजनीति में युवा तुर्क की भूमिका और उनके वे दिन। युवा तुर्क की सदारत में वही सबसे बड़े नाम थे। प्रोफेसर के.सी. जौहरी ने इस पर काम किया है, उन्होंने चंद्रशेखर जी के लिए कहा है, *प्रिंस ऑफ यंग टर्कस्*। *दि इंडस्ट्रिएल लाइसेंसिंग पॉलिसी इंक्वायरी कमेटी* का गठन कराया। '69 में एमआरटीपी एक्ट पास हुआ। बड़े घरानों के बारे में उनके अपने रिजर्वेशंस थे। उस पर उन्होंने कांग्रेस, शासक पार्टी के अंदर बड़ी धारदार लड़ाई लड़ी। कांग्रेस में उस वक्त के जितने *स्टॉल्वर्टस* (शिखर) यानी बड़े दिग्गज स्थापित नेता थे, उनके खिलाफ वह मुखर आवाज बने। अपने ही *फाइनेंस मिनिस्टर* से लेकर सारे ताकतवर लोगों के खिलाफ खड़े हुए।

उस वक्त वित्त मंत्री, उप-प्रधानमंत्री मोरारजी से उनका एक विवाद हुआ। *पार्लियामेंट* में सारे *पेपर्स* रख दिए कि एक खास घराने को कैसे सरकार *फेवर* कर रही है? मामला फंस गया। पार्टी में उन लोगों का *डोमिनेंस* था। इंदिरा जी ने सुझाव दिया कि आप मोरारजी से माफी मांग लें। चंद्रशेखर जी का जवाब अद्भुत था। कहा, मैं सम्मान के लिए राजनीति करता हूँ। *व्हाट एवर ही फेल्ट ही डिड इट*। अंतत: एक रास्ता निकाला गया। पार्टी के *टाप लीडर्स* द्वारा प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी, उनको (चंद्रशेखर) बुलाकर कहें। *विच नेवर हैपेंड* यानी न इंदिरा जी ने बुलाया, न कुछ इस संदर्भ में कहा। 1968 में फरीदाबाद में कांग्रेस सम्मेलन हुआ। एक तरफ पार्टी अध्यक्ष निजलिंगप्पा जी थे, दूसरी तरफ *लेफ्टिस्ट* कांग्रेसी थे। उन्होंने वहाँ अपना समानांतर सम्मेलन किया। चंद्रशेखर जी ने उस पर अपने विचार व्यक्त किए। *पैरलल कन्वेंक्शन* में उसी में उन्होंने चर्चित 10 पॉइन्ट प्रोग्राम बनाया था।

याद रखिए *पॉलिटिक्स* में लगातार *होमवर्क* करना, काम करना जरूरी होता है। वह *एक्सपर्ट्स* (विशेषज्ञों) से लगातार राय-सलाह करते रहे। कांग्रेस *पार्लियामेंट्री पार्टी* के जब *सेक्रेटरी* बने, तो *टॉप एक्सपर्ट्स* को अपने यहाँ बुलाते और उनसे *मेंबर्स* (कांग्रेस सांसदों) को *इंटरेक्ट* कराते। उस वक्त एक नोट तैयार किया, '*नोट ऑन एक्सप्लोसिव सिचुएशन इन दि कंट्री*।'

पुनः एक *पैम्फ्लट* लिखा, '*कांग्रेस क्राइसिस ऐंड दि टास्क अहेड*।' '69 के मुंबई कांग्रेस में आर्थिक प्रस्ताव पर *नोट्स* बनाए। पार्टी के क्या हालात हैं, इसे देखने के लिए 1969 में ए.आई.सी.सी. की दिल्ली में बैठक हुई। इसके लिए 5000 शब्दों का एक प्रस्ताव- '*पॉलिटिकल*

सोल्यूशन ऐंड बेसिक इशूज' तैयार किया। 1969 में एक *पैम्फ्लट* जारी किया, *'कांग्रेस क्राइसिस ऐंड दि टास्क्ड अहेड।'* ये बहुत सारी चीजें (या उनके लेखन) अब मिलती नहीं हैं। ऐसे उनके बहुत सारे अप्राप्त लेखन है, तब के देश के गंभीर हालातों पर। *इंटेलेक्चुअली, एकेडमिकली* अपने विचारों के साथ वह निरंतर आगे बढ़ते रहे। चीजों को *लॉजिकल ऐंड* तक ले जाने की कोशिश की।

मुंबई कांग्रेस में जब *रेजोल्यूशनस* (प्रस्ताव) पास हो रहे थे, तो कई कमेटियों का उन्हें अध्यक्ष बनाया गया था। एक शब्द को लेकर लगभग 10-11 घंटे बहस चली। इसमें अकेले चंद्रशेखर जी एक तरफ, बाकी सभी कांग्रेस के बड़े नेता दिग्गज एक तरफ। अंत में इंदिरा जी ने *इंटरवीन* (हस्तक्षेप) किया। कहा कि भाई, चंद्रशेखर जी की बात को आप लोग मान लीजिए। खाने में देर हो रही है। लगभग रात के 11 बजे हैं। हम लोग खाना खाने चलें। *दिस काइंड ऑफ हिज प्रिपरेशंस वाज इन इंदिरा कांग्रेस*।

कांग्रेस के अंदर '68 और '74 में उनका व्यक्तित्व इतना बड़ा हो गया था कि उनको राज्यसभा से पुनः टिकट ना मिले, इसकी सारी कोशिश हुई। *हाईकमांड* के स्तर से भी। *बट ही केम बैक* यानी पुनः टिकट पाकर सांसद बने। '71 में जितने लोगों को कांग्रेस के अंदर टिकट मिले, उसमें से लगभग 100 से अधिक लोगों को उन्होंने टिकट दिलवाया। 90 से अधिक समाजवादी पृष्ठभूमि के लोग आए। उस दौर में *यंग टर्क* के रूप में सारे *इशूज* पर वह चीजों को आगे ले जा रहे थे। उन्हीं दिनों एक दिन दादा कृपलानी ने उनको बुलाया । कहा, दाढ़ी वाले सुनो, तुम जो कर रहे, उससे कांग्रेस टूट जायेगी। उसी दौर में अतुल्य घोष जी ने उन्हें घर खाने पर बुलाया और कहा कि आप जिस रास्ते से ले जा रहे हैं, कांग्रेस पार्टी टूट जाएगी ।चंद्रशेखर ने कहा कि मेरे जैसा मामूली आदमी ये सारे प्रासंगिक सवाल उठा रहा, जो देश हित में हैं। इनसे पार्टी कैसे टूटेगी? अतुल्य दा ने कहा कि आप नहीं समझते, अपनी ताकत, अपना महत्व।

इसी पृष्ठभूमि में जाकिर हुसैन जी की आकस्मिक मौत से राष्ट्रपति का चुनाव हुआ। इंदिरा जी ने सुबह ही बेंगलोर में चंद्रशेखर को बुलाया। चंद्रशेखर से पूछा। राष्ट्रपति पद के दो दावेदार हैं, कौन प्रत्याशी होगा? चंद्रशेखर जी ने सीधे कहा कि आप व्यर्थ प्रयास कर रही हैं। संसदीय बोर्ड में आपके पास बहुमत नहीं है। इंदिरा जी को यकीन नहीं हुआ। क्योंकि *शी हैड इंफॉर्मेशन* कि हमारे *सपोर्ट* में लोग हैं। चंद्रशेखर जी ने इंदिरा जी के समर्थक नामों में से एक नाम लेकर कहा, यह

आपके साथ नहीं हैं। इंदिरा जी हतप्रभ। ये सब *रिकॉर्डेड फैक्ट्स* है। कहा ये आपके साथ नहीं है, वोट नहीं करेंगे *ऐंड दिस हैपेन्ड*, यानी ऐसा ही हुआ। इंदिरा जी की इच्छा के खिलाफ राष्ट्रपति पद के प्रत्याशी चुन लिए गए। तब मंत्री सी. सुब्रह्मण्यम को फिर इंदिरा गांधी ने भेजा कि चंद्रशेखर को बुलाओ। चंद्रशेखर जी को बुलाया गया। सी. सुब्रह्मण्यम ने कहा कि *नाउ प्राइम मिनिस्टर वांट्स टू रिजाइन*। चंद्रशेखर ने कहा, *व्हाई? शी शुड फाइट बैक*। यह थी कांग्रेस विभाजन की शुरूआत।

उसी दौर में चाहे बैंकों का राष्ट्रीयकरण हो या *प्रिवीपर्स* वगैरह के इनकी पुरानी मांगे थीं, उन्हें चंद्रशेखर की अगुवाई में युवा तुर्कों ने सरकार से पूरी करायी। तब के बंबई कांग्रेस *कन्वेंशन* जहाँ लगा, वहाँ चंद्रशेखर ने अपने नेतृत्व (यानी श्रीमती इंदिरा गांधी) को बदलने की खुली चुनौती भी दी। कहा कि आज हमारा जो नेतृत्व है, अगर वे हमारे बदलाव के कार्यक्रमों पर खरे नहीं उतरे, तो उन्हें भी बदल डालेंगे। इस किस्म का साहस चंद्रशेखर जी में था।

बहुत विस्तार में जाए बगैर आपको बताऊं। सुभाष बाबू के बाद ऐसा पहली बार हुआ। '71 में। पहले कांग्रेस की कमान कांग्रेस *इलेक्शन कमेटी* में होती थी, वही कांग्रेस की *हाईएस्ट बॉडी* थी। बाद के दौर में उसको *एग्जिक्यूटिव बॉडी* के रूप में हम लोग जानते हैं। तब वह कांग्रेस *वर्किंग कमेटी* के मेंबर चुने गये। इंदिरा जी की इच्छा के खिलाफ। तब पार्टी में चुनाव के पहले इंदिरा जी के पास कांग्रेस के दो वरिष्ठ लोग गए। जहाँ तक याद है, शायद इसमें यशवंत राव जी और जगजीवन बाबू थे। कहा उन्हें (चंद्रशेखर) इस बार चुन लेने दीजिए। वह (चंद्रशेखर) पहले से *नॉमिनेटेड* थे। इंदिरा जी ने कहा नहीं चुनाव होने दीजिए। गुजरात के एक *मिस्टर* घिया थे, वह इंदिरा जी के *कैंडिडेट* के रूप में थे। चंद्रशेखर ने उस ऐतिहासिक चुनाव में हराया। *मैडम* गांधी जब *सुप्रीम* थीं, कांग्रेस में। तब, ही (चंद्रशेखर) *वाज इलेक्टेड*। सुभाष बाबू के बाद कांग्रेस में यह पहली घटना हुई थी। आलाकमान के प्रत्याशी को हराकर, *वर्किंग कमेटी* में चुनाव जीत कर सदस्य बनने की।

फिर '73 में *कांग्रेस वर्किंग कमेटी* चुनाव आया। चंद्रशेखर भी प्रत्याशी थे। इंदिरा जी के पास बड़े नेता गये। कहा, नहीं इस बार फिर चुनाव होने दीजिए। फिर इंदिरा जी ने कहा कि मैं नहीं चाहती कि शिमला की घटना दोबारा हो। फिर उमाशंकर दीक्षित जी ने अपना नाम वापस लिया। चंद्रशेखर जी, *वर्किंग कमेटी* में चुने गए।

उनकी *सिविलिटी* (शिष्टता, मर्यादा) क्या थी? अद्भुत। ये सारी बातें अलग-अलग अंशों को जोड़कर कह रहा हूँ। 1973-74 में जब चंद्रशेखर कांग्रेस में थे, उन्हीं दिनों मोरारजी अनशन पर बैठे। तब चंद्रशेखर की मोरारजी से एक राजनीतिक दूरी बन गई थी। कांग्रेस में रहते। परन्तु, सबसे पहले उनके यहाँ जाने वालों में चंद्रशेखर थे। गुजरात असेंबली को भंग करने को लेकर वह अनशन पर थे डू और *डाई*। तो चंद्रशेखर गए। उन्होंने पूछा आप ऐसा क्यों कर रहे हैं? मोरारजी ने पूछा कि चंद्रशेखर आप ईश्वर पर विश्वास करते हैं? उन्होंने कहा, मैं करता भी हूँ, नहीं भी करता हूँ। मोरारजी ने कहा कि भाई आप लोग के साथ यही समस्या है। अगर ईश्वर चाहते हैं, तो मैं जिंदा रहूंगा, नहीं चाहते हैं, तो नहीं। इंदिराबेन (बहन), हमारी बात नहीं मानेंगी, तो ईश्वर की मर्जी। *देन ही थॉट* अब उन्हें क्या करना चाहिए? मोरारजी से मिलकर सीधे संसद आए। संसद में जगजीवन बाबू, यशवंतराव चव्हाण से मिले कि आप लोग कुछ करें? मोरारजी अनशन पर हैं, तो दोनों लोगों ने हाथ खड़ा कर दिया। फिर इन दोनों ने कहा कि आप (चंद्रशेखर) ही कुछ करिए? उसी दिन शाम में वह इंदिरा जी के पास गये। इंदिरा जी पहले बहुत नाराज़ हुईं? कैसे होगा? इस तरह थोड़ी चल सकता है। *लास्ट* में चंद्रशेखर जी ने कहा कि इंदिरा जी, यू *हैव* टू *चूज*। आप गुजरात *लूज* करना चाहती हैं या देश *लूज* करना चाहती हैं। इन दोनों में से एक आपको तय करना होगा। इंदिरा जी का जवाब था कि भाई ठीक है, आप भी सोचिए, हम भी सोचते हैं। इसके बाद रास्ता निकाला गया।

कांग्रेस में 10 वर्षों तक चंद्रशेखर रहे, तो वहां क्या काम किया? हरीश खरे जी (मशहूर पत्रकार, प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के प्रेस सलाहकार) ने इस पर बढ़िया *एनालिसिस* (विश्लेषण) किया है। उनके *कन्विक्शन* के बारे में एक ही बात कहूं, चाहे वह प्रजा सोशलिस्ट पार्टी में रहे हों, पी.एस.पी के मेंबर पार्लियामेंट रहे हो, कांग्रेस के युवा तुर्क रहे हों, उनकी *क्लेरिटी* और *कन्विक्शन* स्पष्ट थे कि हमें किन कार्यक्रमों के माध्यम से देश में बदलाव लाना है? उनके लिए कुर्सी या सत्ता प्राथमिकता में नहीं थी। आपको एक कोट सुनाता हूँ। चंद्रशेखर : ए पॉलिटिकल बायोग्राफी *बाय* श्री पी. के. रविंद्रन से। *ही वाज एसोसिएटेड विद* '*फ्री प्रेस जनरल*', '*टाइम्स ऑफ इंडिया*' एंड 'मातृभूमि'। '*दि 10 पॉइंट प्रोग्राम एक्सेप्टेड बाय दि एआईसीसी ऑफ दि अनडिवाइडेड कांग्रेस इन 1967 स्टार्टेड विद दि प्रोविजन ऑफ बेसिक एमेनिटीज टू दि पुअर, पर्टिकुलर्ली ड्रिंकिंग वाटर इन दि विलेजेस। इन बेंगलोर, एआईसीसी रेजोल्यूशन इन जुलाई*

1961, एंड लेटर इन द गरीबी हटाओ रेजोल्यूशन एट दि बाम्बे एआईसीसी इन दिसंबर 1969, दि इमफेसिस वाज ऑन प्रोविजन ऑफ एसेंशियल एमेनिटीज लाइक ड्रिंकिंग वाटर, हाउसिंग, पब्लिक हेल्थ एंड स्कूल्स फॉर दि अर्बन ऐंड रूरल पुअर एंड येट इवन टिल 1983, नॉट मच हैड बीन डन इन दीज़ वाइटल एरियाज, एज चंद्रशेखर फाउंड ड्यूरिंग हिज 4000 किलोमीटर लांग भारत यात्रा।'

यही चार-पांच चीजें उनके मुद्दे थे। कांग्रेस में युवा तुर्क के रूप में शिखर की राजनीति करते हुए उन्होंने ही इन मुद्दों को पार्टी के सबसे बड़े फोरमों पर लगातार उठाया। *'दि यंग टर्क हैड प्लेस्ड ग्रेट एमफसिस ऑन दि 10 पॉइन्ट प्रोग्राम, इन दि होप दैट समथिंग टेंजेबल वुड बी डन, फॉर दि रिलीफ ऑफ दि पुअर एंड दि डाउनट्रोडेन। अबाउट 100 मेंबर्स ऑफ पार्लियामेंट असेंबल्ड एट चंद्रशेखर रेजिडेंस इन न्यू दिल्ली ऑन 9 अगस्त 1967 इन सपोर्ट ऑफ दि प्रोग्राम एंड इंसिस्टेड दैट इट शुड बी इंप्लीमेंटेड इमीडिएटली। दिस मीटिंग गेव दि यंग टर्क मूवमेंट ए फ्लाइंग स्टार्ट।*

'लेफ्ट ओरिएंटेड कांग्रेस मैन फाउंड अ रेलिंग पॉइंट इन दि 10 पॉइन्ट प्रोग्राम। दे एम्ड एट ब्रिंगिंग अबाउट अ स्ट्रक्चरल चेंज इन दि इकॉनमी फॉर रिड्यूसिंग डिस्पैरेटिज इन इनकम एंड वेल्थ प्रोवाइडिंग एंप्लॉयमेंट टू मिलियंस हू वर विदाउट जॉब्स, एंड कर्विंग मोनोपोली एंड ओस्टेनियस लिविंग। ए मेमोरेंडम अर्जिंग इंप्लीमेंटेशन ऑफ दि 10 पॉइन्ट साइनड बाय 118 मेंबर्स एमपी वाज सबमिटेड टू के कामराज ऐंड प्राइममिनिस्टर मिसेज इंदिरा गांधी।' यानी कभी सौ कभी सवा सौ *एमपीज* उनके साथ *मेमोरेंडम* लेकर *मैडम गांधी* के पास अपने कार्यक्रमों के संदर्भ में जाते थे, तब जब, *शी वाज ऑल इन दि पार्टी*। कांग्रेस में रहते हुए, कांग्रेस के शिखर नेतृत्व के पास देश के बदलाव के लिए बुनियादी कार्यक्रमों का *एजेंडा* लेकर वह अपने नेता कामराज-इंदिरा जी पर दबाव डालने जाते। पद की चाहत में नहीं। यह साहस या *कन्विक्शन* अपने *ऑडियॉलॉजी* के प्रति चंद्रशेखर में था।

प्रखर पत्रकार-विश्लेषक हरीश खरे ने उनके न रहने पर बहुत बढ़िया लिखा, बहुत संक्षेप में बताऊँ, उसके *ऐसेंस* (सार-तत्व) क्या थे? हरीश जी के अनुसार चन्द्रशेखर पहले राजनीतिक नेता थे, जिन्होंने देश का ध्यान आर्थिक एकाधिकारवाद की ओर खींचा। चंद्रशेखर, '67 से '69 के दौरान अपने आदर्शों और कांग्रेस के साथ अच्छे ढंग से तालमेल बनाए हुए थे। स्वाभाविक रूप

से (कांग्रेस हित में) चीजों को रास्ता मिलता रहा। उनके माध्यम से संघर्ष की आंतरिक शक्ति कांग्रेस पार्टी अपने आप अर्जित कर रही थी। यही कारण था कि इंदिरा गांधी को '71 के लोकसभा चुनावों में आशातीत सफलता मिली। '71 चुनाव में इंदिरा जी के बाद सबसे अधिक प्रचार के लिए किसी की मांग थी, तो वह चंद्रशेखर थे।

हरीश जी के अनुसार, चंद्रशेखर अपने सिद्धांतों के प्रति इस कदर आग्रहशील थे, व्यक्तिवाद के खिलाफ थे कि आगे चलकर नेतृत्व से उनका टकराव हुआ। चंद्रशेखर के लिए स्वाभाविक भी था। इंदिरा गांधी, जो बांग्लादेश युद्ध के बाद भारत की एकछत्र नेता के रूप में सामने आईं, उनसे वे धीरे-धीरे कटने लगे। उनकी राजनीतिक विचारधारा में यह कहीं था ही नहीं कि पार्टी में किसी एकाधिपत्य वाले नेता के पीछे वे चलें। यह उनके व्यक्तित्व के विपरीत था। परन्तु कांग्रेस में चंद्रशेखर की जो भूमिका रही और जिस तरह से नीतियों पर पार्टी को चलने के लिए विवश किया और अकेले जिस रूप में माहौल तैयार किया, उस राजनीतिक तेज से वे इंदिरा गांधी के लिए चुनौती बन गए। और विस्तार में नहीं जाना चाहता।

उन्हीं वर्षों में चाणक्य कहे गये वरिष्ठ कांग्रेसी द्वारिका प्रसाद मिश्र ने वर्किंग कमेटी की एक मीटिंग में उनके लिए क्या कहा? द्वारिका प्रसाद मिश्र के लिए कांग्रेस कार्यसमिति की वह अंतिम बैठक थी। बैठक शुरू होने के पहले चंद्रशेखर और पीसी सेठी में मित्रवत नोक-झोंक चल रही थी, तब मिश्र जी ने कांग्रेस कार्यसमिति के सभी सदस्यों को इंगित कर चंद्रशेखर के बारे में कहा कि चंद्रशेखर को देखता हूँ, तो रहीम की दो पंक्तियां याद आती हैं—

'चाह गयी चिंता मिटी, मनुआ बेपरवाह,
जिनको कछु न चाहिये, वे साहन के साह।'

वहां मौजूद कांग्रेसियों से कहा, चंद्रशेखर ऐसे ही हैं, यह हमेशा ध्यान रखना। फिर चंद्रशेखर को सीख दी कि चंद्रशेखर जब तुम इस रास्ते पर चल पड़े हो, तो याद रखना पीठ पर कोई गठरी या बोझ न हो, तो नदी पार करने पर यानी जीवन यात्रा में तुम से कोई क्या शुल्क लेगा? इसे गाँव से आये लोग बेहतर समझेंगे। मिश्र जी ने यह दोहा सुना कर चंद्रशेखर को सीख दी,

'खुल खेलो संसार में, बांध सके नहीं कोय,

घाट जकात क्या करे, जो सिर बोझ ना होय।'

यानी पहले आप जब कहीं आने-जाने के लिए घाट (नदियों को) पार करते थे, तब नदियों को पार करने का यही रास्ता था, तो आपको उसका शुल्क देना पड़ता था। आपके सिर पर अगर बोझ नहीं है, *बैगेज* नहीं है, कोई आकांक्षा नहीं है, तो दुनिया में कोई आपका कुछ बिगाड़ नहीं सकता। चंद्रशेखर इसी रास्ते पर चले।

अजीत सिंह की नई आर्थिक नीतियों (विश्वनाथ प्रताप सिंह की सरकार में) को लेकर वी.पी. सिंह से उनका मतभेद रहा। पूरे देश में वह घूमने निकले। दोबारा कार से गर्मी में 28000 किलोमीटर से शायद ज्यादा यात्रा की। कुछ जगहों पर साथ था। उस वक्त एक बहस भी चलवाई। उदारीकरण और *ग्लोबलाइजेशन* का विकल्प है। *रीजनल स्टेट्स* में किस तरह से आर्थिक विषमता है, इस पर उन्होंने विशेषज्ञों से शोध व काम कराए। उदारीकरण के बाद देश में किस रूप में विषमता से भरा आर्थिक विकास हुआ, इस पर शोधपूर्ण दस्तावेज (पेपर) तैयार कराए। इन शोध पत्रों या *पेपर्स* को तैयार करके लगातार लोगों को भिजवाया। ये *पेपर्स* भी तैयार कराये थे, बड़े आर्थिक *एक्सपर्ट्स* से। *लेमैन लैंग्वेज* में यानी सामान्य-सहज-सरल भाषा। कभी उनकी जेल डायरी जरूर पढ़िए। *वन ऑफ दि बेस्ट पीस* (श्रेष्ठ साहित्य) है, *इंडियन पॉलिटिक्स* को समझने के लिए। *लिटरेरी फ्लो* (भाषायी प्रवाह), उसकी भाषा, उसमें नेताओं के बारे में जो अंदरूनी बातें या संकेत हैं, सुंदर वर्णन, शायद अंग्रेजी में होती, तो दुनिया में जानी गई होती। इतनी बढ़िया जेल डायरी आपको नहीं मिलेगी।

अकेले चलने का उनमें जो साहस था, उसका स्रोत क्या था? इस संबंध में लोगों ने एक बार पूछा। उन्होंने कहा कि बचपन में ही मैंने शरतचंद्र की पुस्तक **'पथ का दावेदार'** पढ़ी थी। **'पथ के दावेदार'** पुस्तक का नायक निराश होने वाला इंसान नहीं, हर विफल व असंभव परिस्थिति में, संघर्ष की नई राह पर चल पड़ने वाला पात्र है। वह एक विफलता के बाद फिर नए संघर्ष में जी- जान से लग जाता है और गंतव्य तक पहुँचता है। *ही नेवर गेट्स टायर्ड*, *दिस वाज दि स्प्रिरिट ऑफ दैट मैन*। 'पथ के दावेदार' का उन्होंने उल्लेख किया। कहा, उससे मुझे ताकत मिली।

उनकी जेल डायरी का एक अंश आपको सुनाता हूँ । इससे आप उनके *कन्विक्शन* के स्रोत को जान सकते हैं। लिखा है, *'आज 11 अक्टूबर है, जेपी का जन्मदिवस। पिछले कई वर्षों से*

*इस दिन मैं जेपी के बारे में कुछ लिखता रहा हूं। गत वर्ष **'यंग इंडियन'** में जो संपादकीय मैंने लिखा था, उसको लेकर बड़ा विवाद उठ खड़ा हुआ था। कांग्रेस के बहुत-से साथी रुष्ट हुए थे। मुझसे तो खुलकर किसी ने नहीं कहा, पर कानाफूसी बहुत हुई थी। आज यह बात मुझे स्मरण हो आयी कि कुछ मित्रों ने मुझे पिछले साल कुछ लिखने से मना किया था। उन दिनों सरकार के कुछ अत्यंत उत्तरदायी लोग इस बात की चर्चा चला रहे थे कि श्रीमती गांधी मुझे मंत्रिमंडल में सम्मिलित करने जा रही हैं। मुझसे यह भी कहा गया था कि मैं इस अवसर को किसी प्रकार हाथ से न निकलने दूँ। इन्हीं बातों का असर मेरे कुछ मित्रों पर था और इसी कारण वे मुझे आगाह कर रहे थे कि मैं जेपी के बारे में कुछ न लिखूं। मैंने उनकी बातें सुन ली, पर लेख लिखकर छपवा दिया और उनसे मैंने साफ-साफ कह दिया कि यदि मैं ऐसा न करता, तो पता नहीं दूसरे मेरे बारे में क्या सोचते, पर मैं निश्चित रूप से अपनी ही दृष्टि में गिर जाता। मेरा स्वत्व समाप्त हो जाता। मेरा आत्मविश्वास चूर हो जाता...' दिस वाज चंद्रशेखर*। परन्तु, उनका मानस कैसा था? जब वह जेल में गए, तो जिस ढंग का साहित्य उन्होंने पढ़ा इससे बहुत सारी चीजों का आपको पता चलेगा। फ्रेंकल की **'मैन्स सर्च फॉर मीनिंग'** से लेकर दोस्तोएव्स्की तक सबका *लिटरेचर* उन्होंने पढ़ा। वह एक जगह दोस्तोएव्स्की की **'क्राइम ऐंड पनिशमेंट'** को कोट भी करते हैं, *'देयर इज नथिंग हार्डर इन द होल वर्ल्ड दैन फ्रैंकनेस एंड देयर इज नथिंग इजियर दैन फ्लेटरी।'*

भारतीय *पॉलिटिक्स* के संदर्भ में उन्होंने क्या कहा ये उनकी जेल डायरी को पढ़ कर पता चलेगा। किस तरह का साहित्य वह जेल में पढ़ रहे थे, इससे उनको समझने में मदद मिलती है। उनका क्या *कन्विक्शन* था? वह 1989 में बलिया से दोबारा चुनाव लड़ने गए। बहुत लोगों ने उन्हें कहा कि इस बार चुनाव प्रचार में आप *आपरेशन ब्लू स्टार* (पंजाब) का पुनः उल्लेख ना करें। क्योंकि पंजाब पर उनका विचार, देश के विचारों से अलग था। पर, मीटिंग में बोलने खड़े हुए, तो पंजाब से ही बात शुरू की। *दिस वाज हिज कन्विक्शन*।

इन चीजों को आगे ले जाने के लिए उनमें क्या *करेज* (साहस) था? कांग्रेस ने बेंगलुरु बैठक में तय कर लिया कि हम राष्ट्रपति के रूप में नीलम संजीव रेड्डी को प्रत्याशी बनाएंगे। चंद्रशेखर ने बताया है कि 'मैं एक दिन और बेंगलुरु रुक गया। पत्रकारों ने जब पूछा कि इस चुनाव में आप क्या करने जा रहे हैं, तो कहा कि *आई शैल थ्रो माई वोट इन द अरेबियन सी, बट आई कैन नॉट वोट फॉर संजीव रेड्डी।' दैट डिफरेंट काइंड ऑफ करेज, ही वाज ऑल अलोन दैट*

मोमेंट। यानी यह अलग साहस उनमें था, जब पूरी कांग्रेस कार्यसमिति संजीव रेड्डी प्रत्याशी (राष्ट्रपति पद) के पक्ष में थी, तो वह अकेले खिलाफ थे। सारे लोग *मैडम गांधी* से लेकर सब संजीव रेड्डी के पक्ष में थे।

एक जे.पी. गोयल हुए। बाद में राज्यसभा सदस्य बने। उन्होंने किताब भी लिखी। अरुण जेटली जी ने उसका *फॉरवर्ड* लिखा है। राज नारायण जी का *सुप्रीम कोर्ट* में जब *मैडम गांधी* के खिलाफ *पिटीशन* चल रहा था, तब वकील थे, वी.एम. तारकुंडे (प्रख्यात जूरिस्ट) ने गोयल साहब से कहा कि चंद्रशेखर जी से बात करिए। क्योंकि वह अकेले *कांग्रेस वर्किंग कमेटी* के *इलेक्टेड मेंबर* थे। अगर वह *हेवियस कॉर्पस फाइल* करते हैं, तो सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई की गुंजाइश बनती है। *इमरजेंसी* के दिन थे । चंद्रशेखर जेल में बंद थे। वह चंद्रशेखर जी से जेल में मिलने गए। सभी बंद बड़े विरोधी नेता बैठे थे। वहां चंद्रशेखर जी भी थे। गोयल अपनी उस किताब में लिखते हैं कि सब सुनने के बाद चंद्रशेखर जी ने साफ कहा कि वह कोई अदालती लड़ाई नहीं लड़ना चाहते। उनके लिए यह नैतिक संघर्ष है। अपनी रिहाई के लिए वह *हेवियस कॉर्पस पिटीशन फाइल* नहीं करेंगे। *दिस वाज हिज कन्विक्शन* (यह उनकी राजनीतिक प्रतिबद्धता या दृढ़ता थी) ।

पटियाला जेल में चंद्रशेखर बंद थे (शायद 1976 अंत में)। *मैडम इंदिरा* गांधी ने अपना एक दूत भेजा कि चंद्रशेखर जी से जेल में जाकर मिलो। *इमरजेंसी* के दिन थे। उन्हें तनहाई में (अकेले) रखा गया था। उन्होंने (चंद्रशेखर) अपनी डायरी में लिखा है, *'जिस दिन वे मिलने के लिए आने वाले थे, उससे एकदिन पहले मुझे जिले के अधिकारियों ने सूचना दी। उन्होंने मुझे उनका नाम नहीं बताया। शायद उन्हें भी नाम मालूम नहीं था। उनके आने पर जेल में बड़ी चहल-पहल थी। जिले के अधिकारी उन्हें अहाते में लाये, जिसमें मेरे कारागार की एकाकी जीवन की कोठरी थी। मैंने सबके साथ सवेरे का जलपान किया। उसके बाद जिले के कलेक्टर महोदय ने मुझसे कहा कि आपको बात करनी होगी। वे अपने अन्य अधिकारियों के साथ बाहर चले गए, ताकि मैं एकांत में बात कर सकूं। मैंने उनसे कहा कि इसकी आवश्यकता नहीं, बहुत बड़ा घेरा है, हम लोग इसमें टहलते हुए बात कर लेंगे, बात भी हो जाएगी और टहलना भी।'*

फिर जब इंदिरा जी के भेजे दूत से जेल में बात शुरू हुई हमने कहा कि *'मेरे पास करने की कोई बात नहीं है, पता नहीं शायद इनको कुछ कहना हो। मेरे यहां उनका आना अप्रत्याशित था। टहलते हुए उनसे जो बातें हुई, उससे मुझे आश्चर्य हुआ।'*

इंदिरा जी के संदेशवाहक ने चंद्रशेखर से कहा कि इंदिरा जी कम्युनिस्ट लोगों से परेशान हैं। वे कुछ नया करना चाहती हैं। नया कदम उठाएंगी। इसमें वह आपका (चंद्रशेखर) सहयोग चाहती हैं। चंद्रशेखर बताते हैं, मैंने तुरंत उत्तर दिया, कि मैं कम्युनिस्ट विरोधी नहीं हूं। मेरा उनसे राजनीतिक मतभेद अवश्य है। इस कार्य में, मैं उनकी सहायता नहीं कर सकता। चंद्रशेखर ने साफ मना कर दिया। इस मामले में इंदिरा जी की कोई सहायता नहीं कर सकते। उस व्यक्ति ने कहा कि फिर जेल से आपके छूटने का क्या होगा? *सी इमरजेंसी वाज ए पीरियड वी कैन रिलाइज दोज मोमेंट्स*। क्योंकि मैं विद्यार्थी दौर में था। मैं महसूस कर सकता हूँ, उसको।

दिस वाज चंद्रशेखर, ना अपने निश्चय से डिगने वाले, न वापस होने वाले, ना डरने वाले, ना अपने स्वाभिमान से समझौता करने वाले। चंद्रशेखर जी ने जवाब दिया । कहा, 'मैंने उनसे कहा कि मैं सारी जिंदगी जेल में बिताने के लिए तैयार हूँ। 18 महीने की कारागार की एकाकी जिंदगी में ही (*ही वाज अंडर सॉलिट्री कन्फाइनमेंट*) मैंने अपना इरादा बहुत मजबूत बना लिया था।' चंद्रशेखर की दो टूक बात सुनकर वह वापस चले गए। कुलदीप नैयर जी ने भी अपनी पुस्तक में इस प्रसंग का उल्लेख किया है कि एक दिन मैं (आपातकाल में जेल से छूटने के बाद) कमलनाथ जी के घर चला गया। कमलनाथ जी 'इंडियन एक्सप्रेस' के बोर्ड में रख दिए गए थे। मैंने उनसे पूछा कब चुनाव कराने जा रहे हैं? तो उन्होंने कहा कि अभी चंद्रशेखर जी से बात करने के लिए अपना आदमी हम लोग भेजे हैं ।

इसी प्रसंग के संदर्भ में चंद्रशेखर जी की जेल डायरी का वह प्रसंग है। चंद्रशेखर जी जेल से जब छूटे, तो उन्होंने नाम लेकर जेल डायरी में लिखा है। जसवंत मेहता, गुजरात के गृहमंत्री थे। प्रजा सोशलिस्ट पार्टी से ही उनके बड़े *ट्रस्टेड फ्रेंड* (पुराने विश्वसनीय मित्र)। इंदिरा जी के खास लोगों में से वह थे। चार बार वह आए। जेल से छूट गए, तब फिर आये कि चलिए। इंदिरा जी मिलने के लिए इंतजार कर रही हैं। कहा, मैं नहीं जा सकता। तो उन्होंने पूछा क्या आप इंदिरा जी से मिलना नहीं चाहते हैं? उन्होंने कहा, जरूर मिलूंगा उनसे। यह पूछने के लिए कि यह सब उन्होंने क्यों किया? यह चंद्रशेखर का *करेज* (साहस) था।

भारतीय राजनीति में *लीगेसी* (विरासत) के रूप में उनका क्या *कांट्रिब्यूशन* (योगदान) रहा? हम आज उनसे क्या सीख और जान सकते हैं? यहाँ हमारे बीच सुधींद्र भदौरिया जी बैठे हैं, जिन्होंने चंद्रशेखर जी के भारत यात्रा में महत्वपूर्ण काम किया। भारत यात्रा सचमुच कैसी थी? ना

खाने की सुविधा, ना आगे कोई सुविधा रहती थी कि सारा इंतजाम पहले से हो। मुझे याद है कि दिल्ली की *इलीट मीडिया* से लेकर देश के अभिजात्य वर्ग के लोग कैसे यह चलाते रहे कि चंद्रशेखर जी ने कई करोड़ की संपत्ति, भारत यात्रा केंद्र ट्रस्टों के माध्यम से बना ली। पर, उन्होंने कभी इन चीजों का जवाब नहीं दिया। आज आपके माध्यम से देश को सच बता रहा हूँ। जो भी ट्रस्ट बने, उनमें सभी वहां के स्थानीय कार्यकर्ता या लोकल लोग थे। परिवार के किसी सदस्य को नहीं रखा। कोई उनका आदमी नहीं रहा।

यहाँ आज एच.एन. शर्मा जी बैठे हैं। जीवन के अंतिम क्षणों में उन्होंने लिखकर दिया तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉक्टर मनमोहन सिंह जी को कि सारे भारत यात्रा ट्रस्ट भारत सरकार ले ले और उनको चलाए। परन्तु, जब अखबार में ये चीजें छप रही थीं, उनको *पॉलिटिकल डैमेज* करने के लिए, तब कभी उन्होंने विरोध नहीं किया। न उत्तर दिया, ना प्रतिकार किया। कहा कि ठीक है, झूठ के पंख बहुत लंबे नहीं होते।

उनमें अद्भुत *क्रिएटिविटी* (रचनात्मक ऊर्जा) थी। बहुत संस्थाएं बनाईं। ये भारत यात्रा केंद्र बंजर जमीन पर बने। उनको स्वर्ग बना दिया, अपने प्रयास से। ये उनमें क्षमता थी। *जेपी ट्रस्ट* कैसे बनाया? जे.पी. के गाँव से हूँ, छह महीने हम लोग बाढ़ के पानी में रहते थे। आने-जाने का कोई रास्ता नहीं था। पहले इंदिरा जी ने पहल की कि जयप्रकाश जी के घर को *ट्रस्ट* बनाया जाए। जे.पी. के न रहने पर । पर, कुछ हुआ नहीं। अंत में चंद्रशेखर ने लोक ताकत से, अपनी ताकत से, जनता की ताकत से, वहाँ जेपी स्मारक ट्रस्ट बनाया। बहुत सारी ऐसी संस्थाएं खड़ी कीं।

आजीवन अपने परिवार के किसी व्यक्ति को न टिकट दिया, न राजनीति में उतारा। उनके छोटे बेटे, नीरज जी बैठे हैं। किसी और पार्टी ने टिकट दिया, उनके न रहने पर। जहां तक मुझे मालूम है वे *करेक्ट* करेंगे कि जमानत के पैसे भी दूसरे लोगों ने दिए। *दिस वाज लिगेसी ऑफ दैट मैन* (भारतीय राजनीति में यह उनकी विरासत थी या योगदान)। तब उनके पास यह आत्मसाहस और बल था।

इसी देश में '84 में दंगे हुए। दिल्ली में। वह अकेले निकल पड़े थे, लोगों को बचाने के लिए। बहुत विस्तार में नहीं जाना चाहता। जिस दिन जनता दल के नेता का प्रधानमंत्री पद के लिए 1989 में चुनाव हुआ, वहां पहला *प्रोटेस्ट* दर्ज कराया। अलोकतांत्रिक तरीके से चुनाव कराने को

लेकर। एसपीजी के एक बड़े अधिकारी हैं। उन्होंने लिखा है कि किस तरह से एक बार प्रधानमंत्री चंद्रशेखर से सिमरनजीत सिंह मान मिलने आए। उन्हें एस.पी.जी. ने लंबी तलवार ले जाने की इजाजत नहीं दी। एस.पी.जी. के अपने प्रोटोकॉल नॉर्म्स होते हैं। कहा कि आप इस तलवार के साथ नहीं मिल सकते। चन्द्रशेखर को पता चला तो कहा, उन्हें मिलने दीजिए। फिर एस.पी.जी के लोगों ने चुपचाप तय किया कि हम दरवाजा थोड़ा खुला रखेंगे, सिर्फ निगरानी करने के लिए। यह प्रधानमंत्री चंद्रशेखर के आदेश और विश्वास को तोड़ना था। पर उक्त सुरक्षा अफसर ने प्रधानमंत्री और मान के बीच जो बात हुई, वह देखा और सुना भी। मान ने म्यान से दिखाने के लिए आधी तलवार निकाली और कहा यह तलवार मेरे पुरखों ने अर्जित किया है। यह बड़ी घातक है। चंद्रशेखर जी ने कहा अंदर ही रख लीजिए, क्योंकि बलिया में जिस घर से आता हूँ, इससे बड़ी तलवार रखी हुई है। ये आत्मविश्वास- था, ये समझ थी उनकी, चीजों को हैंडल करने की उनकी क्षमता थी।

उन्होंने भारत के सामर्थ्य के बारे में और *पर्सनालिटी कल्ट* (व्यक्ति पूजा की राजनीति) की *पॉलिटिक्स* के बारे में क्या कहा या बोला है? जानना चाहिए। वह अपने ढंग से आजीवन इन चीजों के खिलाफ खड़े रहे। कई बार सवाल होता है कि वह प्रधानमंत्री बने, तो कैसी चुनौतियां स्वीकारीं? याद रखिए, '83 में बड़े अर्थशास्त्री, रिजर्व बैंक के पूर्व गवर्नर आईजी पटेल ने आई.आई.एम. बेंगलोर में भाषण देते हुए कहा कि देश जिस राजनीतिक, आर्थिक रास्ते पर चल पड़ा है, ये देश के लिए आत्मघाती होगा, यह मुल्क डेट ट्रैप (कर्ज जाल) में फँसने जा रहा है। क्योंकि *पॉपुलिस* नारों (लोकलुभावन नारों) के लिए आप *शॉर्ट टर्म लोन* (अधिक सूद पर अल्पकालीन ऋण) ले रहे हैं। चंद्रशेखर जी सत्ता में आए, उसके पहले इसी तरह से चीजें होती रहीं। बढ़ते-बढ़ते देश डेट ट्रैप (ऋण जाल में फंस चुका था) में आ चुका था। तब के *कैबिनेट सेक्रेटरी* नरेश चंद्रा ने बाद में अपने एक लेख में इसका उल्लेख किया है। नरेश चंद्रा जी *कैबिनेट सेक्रेटरी* थे। वह सोना गिरवी रखने के प्रस्ताव के साथ उनके पास गये थे। चंद्रशेखर जी का पहला *रिएक्शन* था, जो स्वाभाविक भी था। कहा, कि मैं उस प्रधानमंत्री के रूप में नहीं जाना जाना चाहता, जिसने देश का सोना बेच दिया। नरेश चंद्रा जी ने कहा कि सर, क्या आपको एक ऐसे प्रधानमंत्री के रूप में याद किया जाए, जिसके समय भारत दिवालिया घोषित हुआ था? इधर कुँआ, उधर खाई की स्थिति है। चंद्रशेखर जी ने फिर साहसिक निर्णय लेकर देश की मर्यादा को

बचाया। देश को कंगाल नहीं होने दिया। याद रखिए '85 से लेकर और '90 तक माननीय मनमोहन सिंह से लेकर आगे के जितने रिजर्व बैंक के गवर्नर हुए, सबने वित्त मंत्रालय व तत्कालीन सरकारों (प्रधानमंत्रियों) को लिखा कि हालात खराब हो रहे हैं, जल्द आप *इंटरविन* (हस्तक्षेप) करें। पर चंद्रशेखर के पहले के किसी *प्राइम मिनिस्टर* ने उसको *टैकल* करने (समाधान निकालने) की जरूरत नहीं महसूस की।

आप जानते हैं, *अन-पॉपुलिस्ट* (साहसिक-कठोर) कदम उठाना बड़ा कठिन होता है। अंत में दो पॉइन्ट (बिंदु) और बता दूं। पद त्याग पर लोग कहते हैं, वे (प्रधानमंत्री) पद पर क्यों गए? आप जानते हैं '71 की प्रचंड कांग्रेस जीत में अपनी भूमिका के कारण वह मंत्री बन रहे थे, मना किया। फिर मौके आये, पर '74 में जे.पी. पर जो संपादकीय लिखा, वह आपको सुनाया। जेल गये, पद नहीं लिया। '76 आपातकाल का प्रसंग है, पढ़ियेगा। जे.पी. गोयल की पुस्तक है, **'सेविंग इंडिया फ्रॉम इंदिरा : अनटोल्ड स्टोरी ऑफ इमरजेंसी'** और पत्रकार विजय संघवी की अलग किताब है, जिन्होंने आपातकाल लगते हुए देखा। इन दोनों में बताया गया है कि आधी रात को जब जयप्रकाश जी के गिरफ्तार होने की सूचना मिली। तब चंद्रशेखर तुरत *टैक्सी* से थाने में पहुँच गए। उनको बताया गया कि आपकी गिरफ्तारी का भी *वारंट* है। उन्होंने कहा कि ठीक है। उनको एक अधिकारी ने अलग ले जाकर कहा कि आपके लिए संदेश है, एक टेलिफोन नंबर दिया, आप पी.एम.ओ. में बात कर लीजिए। उन्होंने वहीं से फोन किया । दूसरी ओर फोन पर *मैडम गाँधी* खुद थीं। कहा कि भाई आप इसका (इमरजेंसी का) समर्थन करिए। कल आपको *कैबिनेट* का *सेकंड इंपॉर्टेंट पोस्ट*, हम लोग देंगे। पर, *ही रिफ्यूज्ड*। कुछ बोले नहीं, फोन रख दिया। विजय संघवी जी (जो तब थाने में मौजूद थे) ने लिखा है, मैंने दूर से देखा, चंद्रशेखर ने फोन पटक दिया और जेल चले गए। दो प्रमाणिक स्रोतों या किताबों में ये सूचनाएं हैं। इंदिरा जी मामले में राजनारायण जी के वकील व बाद में लोकदल के सांसद जे.पी. गोयल ने बहुत सारे रिकॉर्ड (तथ्यों के साथ) देकर इसको लिखा है।

'77 में तो आप जानते हैं, जनता पार्टी सरकार में पहले खेप में मंत्री बन रहे थे। *ही लेफ्ट* इट। मोहन धारिया को बनवाया। '79 में जनता पार्टी ने मोरारजी के बाद जगजीवन बाबू को प्रधानमंत्री पद का प्रत्याशी बनाया, तो इंदिरा जी ने कमलापति जी से चंद्रशेखर को संदेश व प्रस्ताव भेजा कि आप पी.एम. बनिए, हम आपको चाहते हैं। *ही रिफ्यूज्ड इट* (मना कर दिया)।

'79 में देवीलाल जी, बीजू पटनायक प्रस्ताव लेकर उनके पास गए कि आप उप प्रधानमंत्री बनिए, *ही रिफ्यूज्ड इट*। ये सारे तथ्य दर्ज हैं। साफ है, वह सत्ता के पीछे नहीं भागे। '90 में कहा है कि लगा कि देश के अंदर सामाजिक तनाव है, बड़ी चुनौतियां हैं, तुरत चुनाव होंगे, तो देश के अंदर टूट बढ़ेगी। आग लगी है, इस पर पानी डालने की जरूरत है, तो अपने *कन्विक्शन* के तहत अपनी शर्तों पर पी.एम. बने। जब स्वाभिमान के विपरीत लगा, तुरत पद त्याग किया।

पी.एम. बनने के बाद, देश में जो बड़े मुद्दे थे, उनको कैसे *टैकल* किया? अनेक गंभीर मुद्दे थे। परन्तु, अयोध्या मामला हल करने के करीब ले जा चुके थे। उनकी सरकार अयोध्या के कारण ही गई। आर्थिक संकट को उन्होंने हल किया। मुल्क को कंगाली से बचाया। पंजाब के आतंकवाद से लेकर, जम्मू-कश्मीर के आतंकवाद, *नॉर्थ-ईस्ट* तक की चुनौतियों, सब पर प्राथमिकता से पहल की। इन सभी मुद्दों से जुड़े सभी पक्षों को बुलाकर बात करने की पहल व कोशिश की। पंजाब में भी चुनाव की घोषणा की। असम में भी चुनाव की घोषणा की।

उनकी *सिविलिटी* (शिष्टता, मर्यादा, लोकव्यवहार) क्या थी? वह कहते थे, इंसान के बीच 99 फीसदी मानवीय संबंध होते हैं, एक फीसदी राजनीतिक। कोई व्यक्ति संकट में हो, बीमार हो, चाहे वह उनका घोर राजनीतिक विरोधी हो, मानवीय आधार पर वैसा मददगार शायद ही उनके समकालीन कोई और नेता उन जैसा हो। वह मानवीय रिश्ते को राजनीतिक चश्मे से देखते ही नहीं थे। आपातकाल के बाद, जनता पार्टी सरकार बनने के बाद अचानक एक दिन इंदिरा जी से मिलने गए। इंदिरा जी और उनके स्टाफ सब लोग उन्हें देखकर आश्चर्य चकित थे। इंदिरा जी से बात हुई। पहले तो दोनों काफी देर तक मौन रहे। फिर पूछा इंदिरा जी आप कैसी हैं? उन्होंने कहा ठीक हूँ। आप कैसे हैं? मैं भी 'ठीक हूँ' का औपचारिक उत्तर दिया। उन्होंने उसके बाद पूछ ही लिया कि आप इस हद तक कैसे चली गई? उनका जवाब था : चंद्रशेखर जी, लोगों ने मुझे गलतफहमी में डाल दिया। फिर इंदिरा जी ने आर.के. धवन को बुलाया और वे सारे पत्र मुझे दिखाए, जिनमें उन्हें गलत सलाह दी गई थी। आर.के. धवन को कहकर सारी *फाइल्स* चंद्रशेखर को दिखवाया। चंद्रशेखर जी ने जो देखा, उस पर वह आगे लिखते, कहते या बताते नहीं हैं। क्योंकि उनमें एक शिष्टता थी, मर्यादा थी। फिर इंदिरा जी ने अपनी *प्रॉब्लमस* बतायीं कि हमारी *सिक्योरिटी* खत्म हो रही है, घर जा रहा है। और भी बहुत कुछ। वहीं से वह, प्रधानमंत्री मोरारजी के यहाँ गए। और

इंदिरा दी की सारी व्यवस्था करवायी। इस संबंध में मोरारजी को जो कहा वह अद्भुत प्रसंग है। मोरारजी से भी ऐसी दो टूक बातें करने का साहस उनमें ही थी।

कुमकुम चड्ढा जी, दिल्ली सत्ता *एस्टेब्लिशमेंट* से बड़ी नजदीक थीं। हाल में देखा। बड़ा अच्छा (नृपेन्द्र मिश्र जी) आपका भी इंटरव्यू किया था। उन्होंने (कुमकुम चड्ढा) जो अपनी पुस्तक लिखी है, **'दि मैरी गोल्ड स्टोरी : इंदिरा गांधी एंड अदर्स।'** कुमकुम जी *क्लोज* थीं, गांधी परिवार से भी। वह चंद्रशेखर जी की *बायोग्राफी* लिखना चाहती थीं। उनसे (चंद्रशेखर) कई बार बात की। परन्तु, उन्हें लगा कि बात आगे नहीं बढ़ रही है। वह लिखती हैं कि मैं कोशिश कर रही थी कि चंद्रशेखर जी जो अंदरूनी बातें नेहरू परिवार से लेकर, इंदिरा जी से लेकर, वी.पी. सिंह से लेकर सबके बारे में जानते हैं, जिन्हें दिल्ली में कोई और नहीं जानता, मैं चाहती थी कि वे चीजें वह बतायें, जो मैं उनके बायोग्राफी में लिख सकूं। चंद्रशेखर जी ने एक दिन कहा, ये सब बंद करो, जो नोट कर रही हो। यह भी कहा कि, मैं एक किताब के लिए अपना आचरण नहीं बदल सकता। निजी बातों की अलग मर्यादा है, उन पर चर्चा नहीं।

कभी किसी के बारे ओछी टिप्पणी नहीं की। जेल में भी जो लोग मिलने आए, जिनके माफीनामा का पत्र भी देखा, किसी के बारे में नाम नहीं लिया। ये *सिविलिटी* थी। आपको बताऊं रजनी पटेल, ललित नारायण मिश्र, वी.के. कृष्ण मेनन ऐसे बहुत सारे लोग जब सत्ता के शिखर के प्रियपात्र रहे, परन्तु जब अकेले पड़ गए, तो एक आदमी जो उनके यहां जाकर खड़ा होता था, और बात करता था, वह चंद्रशेखर थे। सबने अपने मेमोअर्स (संस्मरणों) में यह सब लिखा है।

अंत में कहना चाहूंगा कि दो-तीन दिनों पहले खबर पढ़ रहा था कि पांच सालों में 21 राज्यों की कमाई 47 *परसेंट* बढ़ी और कर्ज 77 *परसेंट* बढ़ गया। 2023 की पहली छमाही में 21 राज्यों का राजस्व घाटा 70 हजार करोड़। वित्तीय घाटा साढ़े तीन लाख करोड़ बढ़ा है। कई राज्य कर्ज के बोझ से डूब रहे हैं। *पॉपुलिस स्लोगंस* (लोक लुभावन) के लिए। क्या हमारे राज्य '90 के आर्थिक संकट से भी सीखने को तैयार नहीं हैं? आज की तारीख में क्या चंद्रशेखर जैसी प्रखर बहस (विधायिका में) करते हैं? कैसे बहस से राजनीति को मोड़ या प्रभावित कर सकते हैं। हम सांसद यह सब सीखने को तैयार नहीं हैं।

आपातकाल में जब वह जेल से बाहर आए '77 में, तो प्रस्ताव दिया गया कि *मैडम गांधी* के खिलाफ रायबरेली से आप चुनाव लड़े। उन्होंने कहा कि मैं राजनीतिक मतभिन्नता व्यक्तिगत लड़ाई में नहीं लाऊंगा? चुनाव लड़ना पड़े, ना लड़ना पड़े, राजनीति में रहना पड़े, न रहना पड़े। *दिस वाज हिज कैलिबर*। ऐसी *सिविलिटी* (मर्यादा) की राजनीति।

अद्भुत मेमोरी (स्मृति) थी, उनकी। अगर एक बयान जो उन्होंने 1955 में दिया होगा, जीवन के अंत तक वही बयान लगभग उसी भाषा में उस मुद्दे पर वो बोलते रहे। ये उनकी प्रखर स्मृति थी। या वैचारिक निरंतरता । उनकी पुस्तक **'जीवन जैसा जीया'** की *लास्ट लाइन* है, *'मैंने संभवत '55 में अपनी डायरी में लिखा था। परिवार की सीमाओं में हम समा न सके, नए परिवार हम बना ना सके, प्यार के परंपरागत स्रोत सूख गए और नए चश्मों की तलाश में हम भटकते ही रहे। अपनी मनः स्थिति तो आज भी वैसी ही है, काश हम भारत के इस परिवार को संजोए रखने की दिशा में कुछ कर पाते...'*

'पथ के दावेदार' के नायक से प्रेरित चंद्रशेखर जी के जीवन का निचोड़ आपसे कहना चाहूं, तो क्या है? रॉबर्ट फ्रॉस्ट की एक बड़ी मशहूर कविता है। एक थी, जिसे पंडित जी (जवाहर लाल जी) बहुत पसंद करते थे। उनके *टेबल* पर रहती थी—*वुड्स आर लवली डार्क एंड डीप बट आई प्रामिज्ड माइल्स टू गो बिफोर आई स्लीप, बट आई प्रामिज्ड माइल्स टू गो बिफोर आई स्लीप*...फ्रॉस्ट की दूसरी कविता थी, वह चंद्रशेखर के व्यक्तित्व को *डिफाइन* करती है, *'दि रोड नॉट टेकन।' आई शेल बी टेलिंग दिस विथ साई, सम वेयर एजेस ऐंड एजेस हेंस, टू रोड्स डाइवर्स इन वुड एंड आई टुक दि वन लेस ट्रेवल बाय*...।' जीवन के शुरू में दो रास्ते थे । एक जिस पर सब चलते थे, दूसरा मैंने उस रास्ता को जीवन में चुना, जिस पर कोई चला ही नहीं था। जंगल, झाड़, पर्वत, पहाड़, अनगढ़, मैं उसी राह से चला। *एंड दैट हैज मेड ऑल द डिफरेंस*। उसने ही सारा फर्क किया। नयी लकीर खींचकर गए, अपनी राह खुद बनाई, अपने शर्तों पर जिये, अपने स्वाभिमान से जिये। अपने वसूलों की राजनीति की। *दिस वाज हिज पर्सनैलिटी* (यह उनका व्यक्तित्व था)।

आप सबका, जिन्होंने बहुत धैर्य और ध्यान से सुना, सारे युवाओं का, आदरणीय नृपेन्द्र मिश्र जी का, भाई सूर्यप्रकाश जी का, यहाँ के सभी स्टाफ का और खासतौर से मेरे सभी स्टाफ एनके सिंह, निराला, अभिजीत, दीपक, देवेंद्र, जिम्मी समेत सबका आभारी हूँ। आपकी वजह से

एक सप्ताह से *आई लिव्ड इन चंद्रशेखर एरा अगेन*। आदरणीय मिश्र जी, आप लोगों ने ध्यान से, धैर्य से सुना बहुत-बहुत व्यक्तिगत आभार और कृतज्ञता आप सबके प्रति।

जय हिंद, धन्यवाद।